Vijay Kumar Jha.
Asso prof
Deptt in History.
V.S.J. College Rajnagar.

Degree Part I

Sangam Literature in Ancient India.

210 ई० के लगभग चेर राजवंश चेर राजवंश के समाप्ति के बाद संगम काल का आविर्भाव हुआ। संगम का अर्थ कवियों के सभा है। तमिल संगम तमिल विद्वानों और कवियों का संगम था। परम्परा के अनुसार संगम की स्थापना चेर राजवंशों के पतन के बाद पाण्ड्य राजाओं ने की थी और तीन संगम हुये थे।

दक्षिण भारत में अशोक के अभिलेखों के बाद तीस अभिलेख प्राप्त हुये है जिनका सम्बन्ध जैन श्रमणों या बौद्ध भिक्षुओं से है। इसके बाद विशाल तमिल साहित्य का प्रारम्भिक स्वरूप प्राप्त होता है जिसे संगम साहित्य कहा जाता है। इसकी प्रारम्भिक रचना दूसरी सदी से चौथी सदी तक मानी जाती है। कुछ इतिहासकार इसे सहस्रों वर्ष प्राचीन मानते है। तमिल देश के इतिहास के लिये संगम साहित्य ही सबसे प्राचीनतम स्रोत है। यह साहित्य नौ भागों में बटा है — नरिणई, कुरुन्थोहई, ऐन्गुनुरु, पादिरुपत्तु, परिपाडल, कलितोहई, अहनानूरु और पुरनानूर। प्रथम संगम प्राचीन मदुरा में हुआ था। दूसरा संगम कपाटपुरम में हुआ। इस संगम का एक ग्रंथ तोलकप्पियम प्राप्त हुआ है जो तमिल भाषा का व्याकरण है। इस ग्रंथ में अर्थ, काम और मोक्ष का वर्णन है। इस ग्रंथ का लेखक तोलकाप्पियर था जो ऋषि अगस्त्य के 12 शिष्यों में एक था।

पत्थुप्पात्तु में दस काव्य है जिसमें सबसे प्रसिद्ध नक्कीरर का मुरुगर्रुप्पादई सबसे प्रसिद्ध है जो देवता मुरुगन के प्रशंसा में लिखा गया है, शेष में सिरुपनर्रुप्पदई, पेरुम्बनर्रुप्पदई, पट्टिन-पलई महत्वपूर्ण है। एत्तुत्थोकई में आठ संग्रह है जो प्रेम के कवितायें है इसे उग्गरपेरु रुद्रशर्मा ने इसे संग्रहित किया था इसमें 400 प्रेम गीत है। कलित्तोगई में 150 श्रृंगार काव्य है परिपद्दल

में देवताओं की प्रशंसा में 40 कविताएँ संग्रहित हैं। पदिरुपट्टु में एक और राजा कि प्रशंसा में आठ कविताएं हैं।

उपरोक्त दस काव्य और आठ काव्य संग्रहों को दो भागों में बांटा गया है। प्रथम अगम काव्य है जो श्रृंगार रस कि कविताएँ हैं। द्वितीय पुरम काव्य जिसमें सांसारिक जीवन का वर्णन है। संगम साहित्य को तमिल देश के पांच क्षेत्रीय आधार पर बांटा गया है — कुरुंजी, पलई, मुल्लई, मरुद्रम और नेडल। प्रत्येक क्षेत्र का अगम और पुरम काव्य पृथक है। प्रत्येक कविता का सम्बन्ध इन पांचों में से किसी एक क्षेत्र से अवश्य होता है।

पादिनेन कीलकनक्कुम में 18 काव्य संग्रह है। इन्हें गौण रचनाएं भी कहा गया है। इन कविताओं में नीति, राजधर्म, नागरिकता, श्रृंगार, जीवन कि कुला आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है। इसमें सबसे प्रमुख तिरुक्कुरल है जिसकी रचना तिरुवल्लुर ने की थी। इसे वेदों के समान पवित्र और उच्च धर्म ग्रंथ माना जाता है। अन्य मुख्य ग्रंथ पलमोली है जिसकी रचना मुनरुरई ने की थी। ये नीति साहित्य है। इस श्रेणी के अन्य ग्रंथ नलादियर तथा आचरकोवयी है जिसमें हिन्दू धर्म के गृहस्थ जीवन से सम्बन्धित बातें हैं। इन समस्त साहित्य से स्पष्ट होता है कि तमिल लोगों पर आर्य संस्कृति के प्रभाव में वृद्धि हो रही थी।

तीसरे संगम में तीन महाकाव्यों कि रचना हुये — शिलप्पदिगारम मणिमेगलई, और शीवगा। सबसे प्रथम शिलप्पदिगारम महाकाव्य है इसके रचयिता इल्लन्गो वडिगल जो चोल राजा करिकल का पौत्र माना जाता है। इसका काल द्वितीय शदी ई० पू० माना जाता है। इसमें पुहार के व्यापारी कोवलन कि कथा है। इस महाकाव्य में तत्कालीन संगम समाज के सामाजिक, नैतिक, आर्थिक जीवन के बारे में प्राप्त सामिग्री उपलब्ध है। मणिमेगलई के रचनाकार मदुरै कि कवि सत्तनर को माना जाता है। इसमें शिलप्पदिगारम कि तरह ही प्रणयगाथा है लेकिन यह गाथा बौद्ध संस्करण माना जाता है, इस ग्रंथ में तत्कालीन समाज के धर्म कि दशा का ज्ञान होता है। इस ग्रंथ में तमिल देश कि ललित कथाओं के विकास के प्रथम बार प्रस्तुत किया गया है। शीवगा सिन्दा — मणि के रचनाकार तिरुतक्क देवर एक जैन मुनि था

Scanned with Cam

इसमें जीवका या जीवक की कथा है जिसके पास आश्चर्यजनक दैवी शक्ति थी और अपनी इसी शक्तियों के बल पर उसने एक सुन्दर स्त्री से विवाह किया था जो अन्त में साध्वी बन गई। ये तीनों महाकाव्य से स्पष्ट होता है कि उत्तर कि आर्य संस्कृति का तमिल देश में प्रभाव बढ़ता गया।

संगम साहित्य में राजनीतिक इतिहास कि सामग्री का पाया गया है किन्तु सामाजिक, आर्थिक, तथा धार्मिक ज्ञान का अभाव नहीं है। संगम काल कि जो साहित्य प्राप्त हुआ है उसमें 2279 रचनाएँ है जो तीन पंक्तियों से लेकर आठ सौ पंक्तियों में रचित है। इन कविताओं के रचनाकार 473 कवि है जिसमें कुछ महिलाएं भी है। प्रत्येक कविता के नीचे कवि का नाम रचना का अवसर तथा अन्य सूचनाएँ है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि संगम साहित्य कि परम्परा काफी प्राचीन है महाभारत का तमिल अनुवाद मदुरै के एक संगम में किया गया था जो कई खण्डों में थी। मदुरै में संगम था जिसका उल्लेख अहप्पोरुल नामक ग्रंथ के टीका से ज्ञात होता है इसका काल 9,990 वर्ष था यह ग्रंथ तीन संगमों कि कथा कहती है जिसका उद्देश्य संगम साहित्यों कि अति प्राचीन प्रदर्शित करना था। संगम साहित्य का रचना काल तीसरी सदी ई० पू० से तीसरी सदी ई० तक रहा होगा।

संगम साहित्य से पाण्ड्य और चेर राजवंश के बारे में समस्त जानकारी मिलती है। पाण्ड्य, चोल और चेर के बारे पर्याप्त जानकारी इस साहित्य से प्राप्त होती है। जिस प्रकार आर्य संस्कृति तमिल देश तक सफर किया इसके बारे में समस्त बातों का जिक्र मिलती है।

Scanned with Can